Thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 18
सृष्टि संवत् 1960853116
2 अगस्त 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-72, अंक : 18, 30/2 अगस्त 2015 तदनुसार 18 श्रावण सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

बलवान भगवान से बल पाकर आत्मा अन्धकार का नाश करता है

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

उद्यत्सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा।
प्राचोदयत्सुदुघा वव्रे अन्तर्वि ज्योतिषा संववृत्वत्तमोऽवः।।

-ऋ० ५।३१।३

शब्दार्थ-इन्द्रः-आत्मा **सहसः**-महान् बलवान् भगवान् से **यत्**-जो **सहः**-बल **उत्+आजनिष्ट**-उत्पन्न करता है, उससे **विश्वा**-सम्पूर्ण **इन्द्रियाणि**-इन्द्रियों को, आत्मा की शक्तियों को **देदिष्टे**-दिशा दिखलाता है और उनको **प्राचोदयत्**-उत्तम प्रेरणा करता है, कार्य में प्रवृत्त करता है तथा **सुदुघा**-उत्तम फल देने वाली क्रियाओं को **वव्रे**-स्वीकार करता है। हे आत्मन्! **अन्तः**-भीतर, अपने अन्दर विद्यमान **संववृत्वत्**-प्रबल रूप से ढकने वाले **तमः**-अन्धकार को **ज्योतिषा**-प्रकाश से **वि+अवः**-विशेष रूप से हटा।

व्याख्या-बल के लिए जब बलपति की शरण में जाकर आत्मा बल पाता है, तब-**'देदिष्टे इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा'** सभी इन्द्रियों को उपदेश करता है, अर्थात मानो वह इन्द्रियों से कहता है कि यह बल मेरा नहीं है, वरन् महान् भगवान् का है।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः [यजुः० २५।१३] जो जीवनदाता और बलप्रदाता है, सभी जिसकी उपासना करते हैं, विद्वान् लोग जिसके आदेश का पालन करते हैं।

बलप्रदाता की सभी उपासना करेंगे ही, क्योंकि-

"बलं वाव विज्ञानाद् भूयः, अपि ह शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते। स यदा बली भवति, अथोत्थाता भवति। उत्तिष्ठन् परिचरिता भवति। परिचरन्नुपसत्ता भवति। उपसीदन् द्रष्टा भवति, श्रोता भवति, मन्ता भवति, बोद्धा भवति, कर्त्ता भवति, विज्ञाता भवति। बलेन वै पृथिवी तिष्ठति, बलेनान्तरिक्षं, बलेन द्यौः, बलेन पर्वताः, बलेन देवमनुष्याः, बलेन पशवश्च वयांसि च तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतंगपिपीलिकं, बलेन लोकस्तिष्ठति, बलमुपास्स्व। -छान्दोग्योपनिषत् ७।८।१

सचमुच बल विज्ञान से बड़ा है। सैंकड़ों वैज्ञानिकों को एक बलवान् कम्पा देता है। जो बलवान् होता है, तो उत्साही होता है। उत्साही होने से सेवा करता है। सेवा करने से समीपता लाभ करता है। समीपता प्राप्त करने में देखता, सुनता, विचारता है तथा ज्ञाता और कर्त्ता बनता है। बल के सहारे ही पृथिवी ठहरी है, बल के सहारे अन्तरिक्ष, बल के आधार पर द्यौ, बल-पर ही पर्वत, बल पर ही विद्वान् तथा सामान्य मनुष्य, बल के सहारे ही पशु-पक्षी, घास-पात, हिंसक, कीट, पतंग, पिपीलिका और बल के आधार पर संसार ठहरा है, अतः बल की उपासना करें। किसी गुरू आदि से कुछ प्राप्त करना हो, तो गुरु की सेवा, शुश्रूषा परिचर्या करनी होती है। निर्बल मनुष्य में सेवा-सामर्थ्य भी नहीं होता, वह सेवा के मेवा से वंचित रहता है, अतः बल प्राप्त करना चाहिए।

बल का परम धाम ब्रह्म है, अतः **'बलमुपास्स्व'** का अन्तिम भाव है-बलप्रदाता ब्रह्म की उपासना करो। बल पाकर **'देदिष्टे इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा'** आत्मा सभी इन्द्रियों को दिशा दिखाता है, अर्थात् जिधर चाहता है, इन्द्रियों को ले जाता है। निर्बल को इन्द्रियां घसीटती रहती हैं। बली बनकर आत्मा उनके बुरे मार्ग में नहीं चलता। वरन्-**प्राचोदयत्सुदुघा वव्रे'** उन्हें उत्तम प्रेरणा करता है और उत्तम फलप्रदायी क्रियाओं को स्वीकार करता है, पसन्द करता है, अर्थात् भगवान् से बल पाकर मनुष्य उत्तमोत्तम कार्यों को करे और अन्त में **'अन्तर्वि ज्योतिषा संववृत्वत्मोऽवः'** अन्दर फैले अन्धकार को प्रकाश से दूर करे। मनुष्य-जीवन का लक्ष्य ही प्रकाश-प्राप्ति है, तभी तो हम सन्ध्या में प्रतिदिन पढ़ते हैं-

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

हम अन्धकार का परित्याग करते हुए, उससे श्रेष्ठ ज्योति को प्राप्त करते हुए प्रकाशकों के प्रकाशक विश्वात्मा रूप उत्तम प्रकाश को प्राप्त करें। प्रकाश बहुत बड़ा बल है। अन्धकार में मनुष्य को भय लगता है, प्रकाश में वह निर्भय रहता है, अतः प्रकाश बल है। प्रकाशों में ज्ञान-प्रकाश श्रेष्ठ है और ज्ञान प्रकाशों में आत्मज्ञानज्योति श्रेष्ठ है। मनुष्य शरीर-दृष्टि से कैसा ही बलवान् क्यों न हो, यदि उसमें ज्ञानबल नहीं, तो वह सचमुच निर्बल है। हाथी एवं सिंह जैसे महाबली पशुओं से मनुष्य अपने ज्ञानबल द्वारा यथेष्ट कार्य लेता है, खेल तक कराता है। इसी भांति आत्मज्ञानबल का बली लाखों मनुष्यों को अपने पीछे लगा लेता है। भाव यह है कि मनुष्य सब प्रकार के बलों का संचय करे और उसके लिए बलधाम भगवान् की शरण में जाए।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

Thearyasamaj.org

वैज्ञानिक कृत्य अग्निहोत्र-होम से आरोग्यता सहित अनेक लाभ

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

हमने अद्यावधि जो अध्ययन किया है उसके आधार पर हमें लगता है भारत की संसार को सबसे प्रमुख देन वेदों का ज्ञान है। यदि वेदों का ज्ञान न होता तो वैदिक धर्म व संस्कृति अस्तित्व में न आती और तब सारा संसार अज्ञान व अन्धकार से ग्रसित व रूग्ण होता। आज भी अधिकांशत: यही स्थिति है परन्तु फिर भी आशा की एक किरण दिखाई देती है कि ईश्वर कृपा करेंगे तो लोगों का अज्ञान, भ्रम व स्वार्थ समाप्त होंगे और लोग ज्ञान की खोज करते हुए वेदों पर पहुंच कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर कृतकृत्य होंगे। इसके साथ ही ईश्वर तथा वेदों को सृष्टि के आरम्भ से अद्यावधि सुरक्षित रखने के लिए सभी ऋषियों का आभार व धन्यवाद प्रदर्शन करेंगे। वेद ज्ञान अपने आप में संसार की सबसे मूल्यवान व अनमोल वस्तु है। इसके बाद वेद ज्ञान पर आधारित हमारे ऋषियों द्वारा किया गया पंचमहायज्ञों का विधान है। इन पंचमहायज्ञों को श्रेष्ठ मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले पांच प्रमुख नित्यकर्मों की संज्ञा दी जा सकती है जो उन्हें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कराने में आधारभूत हैं। जीवन की सफलता का रहस्य सत्य ज्ञान का सेवन और तदनुसार आचरण व पुरुषार्थ में छिपा हुआ है। पांच महायज्ञों में प्रथम सन्ध्या है। जिसमें ईश्वर के ध्यान सहित वेदों का अध्ययन भी सम्मिलित है। वेदाध्ययन व सन्ध्या इन दोनों के पालन से सत्य ज्ञान उत्पन्न होता है और इसके आचरण की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। ईश्वर ने मनुष्यादि प्राणियों के लिए ही यह सारी सृष्टि बनाई है और वही इसे धारण किए हुए हैं एवं चला रहा है। उसका धन्यवाद करने के लिए ही सन्ध्या का विधान है जो मनुष्य नित्यप्रति ईश्वर का ध्यान व उपासना नहीं करता वह कृतघ्न होने से निन्दनीय होता है। अतीत काल में ऐसा न करना दण्डनीय भी रहा है। दूसरा कर्त्तव्य हवन व अग्निहोत्र का प्रात: सूर्यास्त के समय व सायं सूर्यास्त से पूर्व करने का विधान किया गया है। हवन व यज्ञ करने से अनेक लाभ होते हैं। प्रतिदिन हवन न करने से हमारे पापों में वृद्धि होती है, करने से हम पापों से बचते हैं और सुखों का आधार पुण्य अर्जित होता है। यज्ञ करने से घर में वायु की शुद्धि, वायुमण्डल व जलवायु का लाभ, स्वास्थ्य सुधार व रोगों की निवृत्ति, कर्त्तव्य पालन से आत्मोन्नति, वेदों की रक्षा व अध्ययन को प्रोत्साहन आदि अनेक लाभ होते हैं। आज के लेख में हम महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित हवन के विभिन्न पहलुओं को पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। हवन एक ज्ञान-विज्ञान युक्त कार्य व उद्यम है। इसमें कहीं किसी प्रकार का कोई अन्धविश्वास व मिथ्याचार नहीं है। इसके करने से देश व समाज सहित व्यक्ति विशेष को लाभ होता है और हमारा अगला जन्म भी सुधरता है। आईए, महर्षि दयानन्द के हवन के विषय में प्रस्तुत विचारों पर दृष्टि डालते हैं।

महर्षि दयानन्द अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

प्रश्न-हवन से क्या उपकार होता है ?

उत्तर-सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दु:ख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न-चन्दनादि घिस के किसी को लगावे व घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार हो। अग्नि में डाल के व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

उत्तर-जो तुम पदार्थ विद्या-विज्ञान को जानते तो कभी ऐसी बात न कहते क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव व नाश नहीं होता। देखो, जहां होम होता है वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होकर, फैल कर, वायु के साथ दूर-दूर के स्थानों व देशों में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्न-जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगंधित पुष्प और इतर आदि को घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुख कारक होगा।

उत्तर-इन पदार्थों से होने वाली सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ अर्थात् घर-निवास स्थान की वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि का ही सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु का प्रवेश वहां करा देता है।

प्रश्न-तो मन्त्र पढ़ के होम करने का क्या प्रयोजन है ?

उत्तर-मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जाएं और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें। वेद पुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी हवन में मंत्रोच्चार करने से होती है।

प्रश्न-क्या इस होम करने के बिना पाप होता है ?

उत्तर-हां, क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होकर वायु और जल में मिलकर उनको बिगाड़ता है, उससे रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दु:ख प्राप्त कराता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना व उससे अधिक सुगन्ध वायु और जल में फैलाना चाहिए। किसी को यह पदार्थ खिलाने पिलाने से उसी एक व्यक्ति को सुख विशेष होता है। जितना घृत और सुगंधादि पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य से होम करने से लाखों मनुष्यों का उपकार होता है। परन्तु जो मनुष्य लोग घृतादि उत्तम पदार्थ न खाएं तो उनके शरीर और आत्मा के बल की उन्नति न हो सके, इससे अच्छे पदार्थ खिलाना-पिलाना भी चाहिए। परन्तु उससे अधिक होम करना उचित है। इसलिए होम का करना अत्यावश्यक है।

प्रश्न-प्रत्येक मनुष्य कितनी आहुति करें और एक-एक आहुति का कितना परिमाण है ?

उत्तर-प्रत्येक मनुष्य को घृतादि की सोलह-सोलह आहुति देनी चाहिएं और छ:-छ: मासे एक-एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून होना चाहिए और जो इससे अधिक करें तो बहुत अच्छा है। इसलिए आर्यवरशिरोमणि महाशय ऋषि-महर्षि, राजे-महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी हवन का पूर्ववत् प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।

महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त विचारों से हवन व यज्ञ का महत्त्व सिद्ध होता है। भोगवादी पाश्चात्य विचारों व जीवन शैली ने इस प्राणी मात्र की हितकारी वैदिक धर्म व संस्कृति को भारी हानि पहुंचाई है। मनुष्य को मनुष्य मननशील होने के कारण से कहते हैं। अत: हमें प्राचीन बातों की समीक्षा कर उपयोगी बातों को जीवन का अंग बनाना चाहिए। एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। वर्षों पूर्व भोपाल गैस त्रासदी घटी थी जिसमें हजारों लोग मारे गए व बड़ी संख्या में लोग जीवन भर के लिए रोगी हो गए थे। घटना के समय एक आर्य समाजी परिवार वहां यज्ञ कर रहा था। यज्ञ के प्रभाव से यज्ञ के निकट उपस्थित किसी सदस्य को किंचित स्वास्थ्य हानि नहीं हुई थी। यह यज्ञ का महात्मय है। हवन के विषय में शतपथ ब्राह्मण से जनक-याज्ञवल्क्य संस्कृत भाषा के महत्त्वपूर्ण संवाद को हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं। जनक (वैदेह) ने याज्ञवल्क्य से पूछा।

याज्ञवल्क्य, क्या अग्निहोत्र की सामग्री जानते हो ? उसने कहा-सम्राट्! जानता हूं। जनक-क्या ? याज्ञवल्क्य-दूध या घृत। जनक-यदि दूध न हो तो किससे हवन करें ? याज्ञवल्क्य-जौ और चावल से। जनक-यदि जौ और चावल न हो तो....? याज्ञवल्क्य-जो अन्य औषधियां हों, उनसे। जनक-जो अन्य औषधियां न हों तो ?

(शेष पृष्ठ 7 पर)

Thearyasamaj.org

संम्पादकीय......

अमर स्वाधीनता सेनानी-चन्द्रशेखर आजाद

हमारे देश भारतवर्ष को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने में अनेकों शूरवीरों तथा क्रान्तिकारियों का योगदान है जिन्होंने अपना तन-मन-धन और सर्वस्व इस देश की आजादी के लिए न्यौछावर कर दिया। अपने निजी सुखों को त्यागकर राष्ट्रहित के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। ऐसे शूरवीरों, क्रान्तिवीरों के कारण हमारा देश आजाद हुआ। ऐसे ही क्रान्तिकारियों में अमर शहीद चन्द्रशेखर का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। चन्द्रशेखर आजाद के नाम से अंग्रेज अधिकारी डर जाते थे। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म वर्तमान मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भावना ग्राम में 23 जुलाई 1909 को हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद बचपन से ही वीर और साहसी थे। वे हमेशा सच बोलते थे। एक बार वे साधु के वेश में घूम रहे थे तो पुलिस वालों ने उन्हें पकड़ लिया और उनसे पूछताछ की जाने लगी। पुलिस वालों ने उनसे पूछा कि क्या तुम आजाद हो? इस पर चन्द्रशेखर आजाद ने बड़ी चतुराई से सच बोला कि अरे हम आजाद नहीं हैं तो क्या हैं? सभी साधु आजाद होते हैं। हम भी आजाद हैं।

इतना सच बोलने के बाद भी वे पुलिस के चंगुल से निकल गए। उन्होंने जीवन में एक ही सबक पढ़ा था कि गुलामी जिन्दगी की सबसे बड़ी बदकिस्मती है। जब उन्होंने क्रान्तिकारी जीवन में कदम रखा तो इनका साहस भरा कार्य काकोरी षड्यन्त्र था। 9 अगस्त 1925 को सहारनपुर से लखनऊ जाने वाली गाड़ी को काकोरी के पास रोक कर अंग्रेजी खजाना लूटने के पश्चात नौ दो ग्यारह हो गए थे। चाहे कइयों को बाद में पुलिस ने पकड़ कर फांसी की सजा दी थी पर आजाद आखिरी समय तक आजाद ही रहे थे। चन्द्रशेखर आजाद देशभक्ति के गीतों को बड़े चाव से सुना करते थे। चन्द्रशेखर आजाद आजीवन अविवाहित रहे। वे कहा करते थे कि अपने सिर पर मौत का कफन बांध कर चलने वाला व्यक्ति कभी शादी के बन्धन में बंधने की कल्पना भी नहीं कर सकता। आजाद ही नहीं उनके दल का हर एक सदस्य अपने घर बार को तिलांजलि देकर दल में शामिल हुआ था। जो व्यक्ति गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का स्वप्न लेकर आया हो वह वैवाहिक सुख की कल्पना भी कैसे कर सकता है। एक बार उनके दल के किसी सदस्य ने आजाद से पूछ लिया कि वे कैसी पत्नी की इच्छा करते हैं तो आजाद ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया कि मेरे अनुसार मेरे लायक लड़की हिन्दुस्तान में तो क्या, सारी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी क्योंकि मैं ऐसी पत्नी चाहता हूं जो एक कन्धे पर राईफल और दूसरे कन्धे पर कारतूसों से भरा हुआ बोरा उठाकर पहाड़ से पहाड़ घूमती रहे और इस तरह आजादी के लिए अपनी जान दे दे।

27 फरवरी 1931 को वह महान् दिन था जिस दिन आजाद ने अपने जीवन से आजादी पाई थी। वे अक्सर कहा करते थे कि किसी मां ने अभी वो लाल पैदा ही नहीं किया जो आजाद को जीवित पकड़ सके। उन्होंने कसम खाई थी कि वे कभी पुलिस के हाथों जिंदा गिरफ्तार नहीं होंगे। इसी कसम को निभाते हुए वे शहीद हुए थे। प्रयाग के अलफ्रेड पार्क में वे अपने साथी के साथ बैठकर कोई महत्वपूर्ण चर्चा कर रहे थे कि उनके एक साथी ने विश्वासघात करते हुए पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस ने चारों ओर से घेर लिया। आजाद ने बड़ी वीरता से सामना किया। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी लेकिन आजाद कब हार मानने वाले थे। उन्होंने अपनी पिस्तौल से निशाना साधकर सी. आई. डी. के सुपरिटेंडेंट की भुजा पर गोली मारकर उसे नकारा कर दिया। इसी प्रकार एक इंस्पैक्टर का जबड़ा भी उड़ा दिया।

अचानक उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिस्तौल में एक ही गोली बची है। वे अजीब संकट में फंस गए। उन्हें अपनी कसम बार-बार याद आने लगी कि जिन्दा रहते हुए पुलिस के आदमी मुझे कभी हाथ नहीं लगाएंगे। उन्होंने अपनी कनपटी पर पिस्तौल की नाल लगाकर घोड़ा दबा दिया और आत्म बलिदान का गौरव प्राप्त किया। उनके शव को देखकर भी पुलिस वालों को यकीन नहीं हो रहा था कि वे मर गए हैं। आजाद से भयभीत पुलिस वाले उनके शव को गोलियां मारते रहे। ऐसे निर्भीक और तेजस्वी थे अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जिन्होंने मरते दम तक अपनी कसमों को निभाया और जीते जी अंग्रेजों के हाथ नहीं आए।

आज के युवा वर्ग को ऐसे क्रान्तिकारियों के जीवन से शिक्षा लेकर निर्भीक, ओजस्वी और बलवान बनना चाहिए। नशे के कारण जो अपनी जवानी को बर्बाद कर देते हैं वे कभी भी जीवन में उन्नति नहीं कर सकते। अपने यौवन को बर्बाद न करके उसे राष्ट्रहित के कार्य में लगाना चाहिए। चन्द्रशेखर आजाद जैसे कितने ही क्रान्किारियों ने अपनी भरी जवानी के सुखों को छोड़कर इस मार्ग को अपनाया। वे चाहते तो सुख का जीवन व्यतीत कर सकते थे परन्तु उनका लक्ष्य अपने देश को स्वतन्त्र देखना था। इसके लिए उन्होंने त्याग के रास्ते को अपनाया। अपने घर-बार और परिवार को त्याग करके उन्होंने अनेकों कष्ट सहे, कई-कई दिनों तक भूखे रहे परन्तु अपने लक्ष्य से एक क्षण के लिए भी विचलित नहीं हुए। इसलिए मैं आज के युवा वर्ग के लिए यही सन्देश देना चाहता हूं कि वे नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहकर अपनी जवानी का, अपनी ऊर्जा का, प्रयोग राष्ट्रहित के कार्यों के लिए करें। अपने यौवन को नशे के प्रवाह में न बहने दें और कवि की इन पक्तियों को हमेशा याद रखें-

जवानों जवानी में चलना जरा संभल कर
आती नहीं है दोबारा निकल कर।
कठिन यह जवानी की मंजिल है यारो,
लड़खड़ा जाए कुछ दूर चल कर।
विषय रूपी रहजन अनेकों मिलेंगे,
खबरदार कोई ले न जाए छल कर।
जिन्दगी न दिल है लुटाने की वस्तु,
लुटाया जिसने रहा हाथ मल कर।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

लेखक और विद्वान् महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा के सभी लेखक, विद्वान् और पाठक महानुभावों से निवेदन किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा का श्रावणी पर्व तथा श्री कृष्णजन्माष्टमी का संयुक्त विशेषांक निकाला जा रहा है। इस विशेषांक के लिए आपके सारगर्भित और अप्रकाशित लेख सादर आमन्त्रित हैं। आप अपने लेख जल्द से जल्द आर्य मर्यादा के कार्यालय गुरूदत्त भवन, गुरूदत्त रोड़ चौक किशनपुरा जालन्धर में भेजने की कृपा करें। समय पर प्राप्त होने वाले लेखों को आर्य मर्यादा विशेषांक में उचित स्थान दिया जाएगा। -संपादक आर्य मर्यादा साप्ताहिक

आओ हम सब मिलकर श्राद्ध और तर्पण करें

-ले० आचार्य महावीर सिंह प्रबन्धक दयानन्द मठ चम्बा

मेरे प्रियजनों, हृदय में स्थित आत्मीय जनों ऋग्वेद के अन्दर वर्णित तथा पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज द्वारा व्यवहार में अवतरित कार्यरूप में परिणत दुर्लभ शारद यज्ञ के विषय में पूज्य स्वामी जी महाराज हर वर्ष अपने निमन्त्रण पत्रों में विस्तृत रूप से चर्चा करते रहते हैं, उसकी उपयोगिता, उसके महत्व के विषय में बताते रहे हैं। यहां तक कि एक बार नौ दिन व नौ रात्रियों तक इसे निरन्तर किया। यह यज्ञों के प्रति स्वामी जी का समर्पण है। औरंगजेब के भाई दाराशिकोह ने जब उपनिषद पढ़े, उसमें भरे ज्ञान से उसका साक्षात्कार हुआ, तो वह सड़कों पर नाचने लगा। यह कहते हुए नाचनें लगा कि मिल गया, मुझे सब कुछ मिल गया। जीवन में जो प्राप्तव्य है, वह सब मिल गया। ज्ञान का खजाना मिल गया, सुख व शान्ति का सार मिल गया, अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए। ठीक इसी प्रकार स्वामी जी ने अपने स्वाध्याय में वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों व दर्शनशास्त्रों में यज्ञ की महिमा को पढ़ा, यज्ञ के विषय में जाना तो उन्होंने भी उन्मुक्त भाव से यज्ञों के प्रति अपने आप को समर्पित कर दिया। अपने जीवन को यज्ञमय बना दिया, यज्ञों को अपने जीवन में उतार दिया, उतारा ही नहीं उन्हें जन-जन के आकर्षण का विषय बनाने का उपक्रम भी करने लगे। यानि बृहत्तर यज्ञों का आयोजन भी करने लगे। मठ में निर्मित भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन ही सवा करोड़ गायत्री मन्त्रों की आहुतियों से किया गया जो कि लगातार साढ़े पाँच मास तक निरन्तर चला। तत्पश्चात एक वर्ष तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का आयोजन किया गया। इसी बीच वेदों का पारायण करते हुए बीच-बीच में विशेष विषयों को लिए उपस्थित वेद मन्त्रों की व्याख्या करते, उन पर प्रवचन देते हुए ऋग्वेद में वर्णित शारद यज्ञ की ओर इंगित करने वाला मन्त्र उपस्थित हुआ। उस पर स्वामी जी ने चिन्तन किया, मनन किया, तत्पश्चात उस पर प्रवचन दिया तो सभी संकल्प कर बैठे कि हम इस यज्ञ को करेंगे। हर वर्ष करेंगे और श्रद्धा व निष्ठा से करेंगे। देश जाति व समाज के कल्याण के लिए करेंगे। विश्व भर के तथा प्राणिमात्र के कल्याण के लिए करेंगे। तभी से यह यज्ञ मठ में निरन्तर हो रहा है। इसके बाद डेढ़ वर्ष तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का भी आयोजन किया गया। जिसकी सुगन्धि वन, उपवनों से आज भी प्रवाहित हो रही है। जिनमें उच्चरित पवित्र वेदमन्त्रों की ध्वनियां पर्वतों से गिरिगहवरों से टकरा कर प्रतिध्वनित हो रही हैं। दिग-दिगान्तरों को गुजांयमान कर रही है। यह तो रही पूज्य स्वामी जी महाराज के कृतित्व व व्यक्तित्व की संक्षिप्त झलक। अब वे अशक्त हैं पर भावना तो वही है। उत्साह में तो कोई कमी नहीं है। उन यज्ञों की निरन्तरता के लिए चिन्तातुर हैं। हृदय में व्याकुलता लिए हुए हैं। मेरे बाद भी यज्ञों का यह क्रम चलता रहेगा, इस बात से सुनिश्चित होना चाहते हैं। इसकी अभिव्यक्ति तो नहीं करते पर हृदय में इस चाहत को लिए उनका मन व्याकुल हैं, यह हम जानते हैं। अब हम सभी को जो उनसे प्रीति रखते हैं, उनके कार्यों को सराहते हैं, जो उन्हें अपना गुरू मानते हैं अथवा उनके प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं। समष्टिगत उनके कार्यों में जो भागीदार बनना चाहते हैं, संसार के उद्धार व प्राणिमात्र के कल्याण के लिए यह कार्य है, यह स्वीकार करते हैं। कर्त्तव्य बनता है कि उनके कार्यों में गतिशीलता बनाए रखें, उन्हें आगे बढ़ाएं।

अब ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र से अपनी बात को शुरू करता हूं। वह मन्त्र है-अग्निमीडे-हम अग्नि की उपासना करते हैं, उप+आसन अर्थात् हम अग्नि के समीप बैठते हैं। समीप बैठने से तद्गुण तद्स्वभाव मनुष्य के अन्दर स्थानांतरित होने शुरू हो जाते हैं। अग्नि के समीप बैठने से आत्मबल बढ़ता है, भय व आशंका दूर होती है और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अग्नि के गुण समाज में जिन-जिन में भी घटते हैं। वे सभी अग्निस्वरूप हैं। समाज में विद्यमान भय और आशंका को दूर करने वाले जो महापुरूष हैं, हम लोग उनका दामन पकड़े उनके समीप बैठें। उनके मार्गदर्शन में अपने जीवन को चलाएं। श्रद्धापूर्वक उनका अनुगमन करते हुए तदनुकूल व्यवहार और आचरण करते हुए उन्हें तृप्त करें। इसी को श्राद्ध और तर्पण कहते हैं। यह कर्म जीवित पुरुष की विद्यमानता में किया जाए तो लाभकारी है अत्युत्तम है, सार्थक है। मृत्यु के पश्चात भी किया जाए तो हानिप्रद नहीं है। बशर्ते जीते जी भी यह कर्म उसके सामने किया जाता रहा हो।

जीते जी दंगम दंगा, मरने के बाद पहुंचाए गंगा वाली बात नहीं। मनुष्य जीते जी सूखी रोटी के लिए भी तरसता रहा। मरने के बाद उत्तम से उत्तम पकवानों से ब्राह्मणों को उसके नाम पर भोग कराया जाता है, यह ठीक नहीं। अपने आराध्यों को, अपने पूज्यों को, अपने बुजुर्गों को जीते जी ही श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा सुश्रूषा से तदनुकूल कर्मों से तृप्त करना चाहिए। उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए यही श्राद्ध और तर्पण का अभिप्राय है।

महाराणा प्रताप मृत्यु शय्या पर लेटे हैं। लम्बी-2 श्वासें छोड़ते हुए सामने टकटकी लगाए बैठे हैं। प्राण नहीं निकल पा रहे। चाहते हुए भी प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। महाराणा के चारों ओर बैठे उनके वफादार सामन्त राणा की एक-एक गतिविधि पर ध्यान टिकाए हुए हैं। टक-टकी लगाए बैठे हैं। वे भांप गए कि महाराणा के हृदय में कोई असह्य पीड़ा है जिसके कारण प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। कोई महत्वपूर्ण जिज्ञासा है जिसके समाधान के बिना देह नहीं छोड़ना चाहते। कोई ऐसी बात है जो उन्हें काटे जा रही है। सामन्तों ने बेबस आंखों से विराने में ताकते हुए महाराणा से इसका कारण पूछा कि महाराणा बताओ आपके मन में क्या व्यथा है? कौन सी पीड़ा जिसके कारण आप व्यथित हो, उदासी लिए हुए हो? जीवन भर आपके हर आदेश पर प्राणों का भी उत्सर्ग करने वाले हम लोगों के लिए आपका क्या आदेश है? वह कौन सा प्रिय कर्म है जिसे हम पूरा कर कण्ठ में अटके आपके प्राणों को खुशी-खुशी निकलने में सहायक हो सके। आपकी व्यथा, आपकी लाचारी हमसे देखी नहीं जा रही। तब राणा ने सभी सामन्तों की ओर अपनी नजरें घुमाकर अपने समीप आने को कहा। सभी सामन्त महाराणा के समीप आ गए। समीप में आए सामन्तों को राणा ने कहा-मेरे प्रिय सामन्तों! आप लोगों ने अनेक कष्टों को झेलकर भी जीवन भर मेरा साथ दिया। मातृभूमि की आजादी के लिए अपना घर परिवार, अपनी सुख सुविधाएं सब न्यौछावर कर दिए। आज मेवाड़ की आजादी शेष है। मेरा बेटा अमर सिंह इस योग्य नहीं कि वह मेवाड़ को आजाद करा सके। मैं मेवाड़ की आजादी के अधूरे स्वप्न को लेकर जाने के लिए तैयार नहीं हूं। यह टीस मेरे दिल में है जिसके कारण मेरे प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। आप लोग मुझे भरोसा दो कि मेरे अधूरे स्वप्न को आप लोग प्राणार्पण से पूरा करेंगे। यह सुनकर सभी सामन्तों ने अपनी-अपनी तलवारों के मुंठ पर हाथ रखकर महाराणा के सामने प्रतिज्ञा की कि हे महाराणा! हम आपके वफादार सामन्त प्रतिज्ञा करते हैं कि हम मेवाड़ की आजादी के लिए संघर्ष करते रहेंगे। जब तक मेवाड़ आजाद नहीं हो जाता तब तक हम न तो घरों में सोऐंगे, न ही धातुओं के बर्तनों में खाना खाएंगे। मेवाड़ की आजादी ही हमारे जीवन का लक्ष्य होगा और उसके लिए हम संघर्ष करते रहेंगे। यह सुनकर महाराणा के मुख पर उदासी के स्थान पर प्रसन्नता आ गई। मुरझाया हुआ महाराणा के चेहरा एक आलौकिक तेज से दमकने लगा। चिन्ता व दुःख की ज्वारभाटों से उद्वेलित हृदय सहसा ही शान्त हो गया। कष्ट में अटके प्राण आसानी से निकल गए। महाराणा ने आश्वस्त होकर प्राण त्याग दिए। सामन्तों से अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने का वचन लेकर महाराणा इहलोक से परलोक की ओर कूच कर गए। महाराणा के सामन्तों ने श्रद्धा से राणा के कार्यों को पूरा करने का वचन लेकर राणा द्वारा चलाए आजादी के मिशन को जारी रखने की कसमें खाकर राणा को तृप्त कर दिया। प्रियवरों यह है श्राद्ध व तर्पण।

मेरे आत्मीय जनों कई लोग पूछते हैं कि क्या इस बार भी शारद यज्ञ होगा? (**शेष पृष्ठ 6 पर**)

Thearyasamaj.org

सनातन धर्म और आर्य समाज

-ले० कृष्ण चन्द्र गर्ग 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा

अथर्ववेद में 'सनातन' शब्द का अर्थ किया गया है-

सनातनमेनमाहुरताद्य स्यात् पुनर्णवः। अहोरात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः।।

-अथर्ववेद 10.8.23

अर्थ-सनातन उसको कहते हैं कि जो कभी पुराना न हो, सदा नया रहे, जैसे दिन-रात का चक्र सदा नया रहता है।

वेद-सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया वो ज्ञान है जिसकी मनुष्य को संसार में रहते हुए आवश्यकता है और जिसको जान करके मनुष्य सुख पूर्वक रह सकता है। 'वेद' शब्द का अर्थ ही ज्ञान है। वेद ज्ञान दो अरब वर्ष पहले जितना सत्य और व्यवहारिक था आज भी उतना ही सत्य और व्यवहारिक है। अतः वेद सनातन हैं और वेद का ज्ञान भी सनातन है।

सनातन धर्म वेद को धर्म का आधार मानता है और आर्य समाज भी वेद को धर्म का आधार मानता है। वेदों के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थों में जो-जो बातें वेद अनुकूल हैं। आर्य समाज उन्हें स्वीकार करता है और जो-जो बातें वेद विरुद्ध हैं आर्य समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता। सनातन धर्म ने बहुत सी बातें वेद विरुद्ध भी स्वीकार कर ली हैं। यही अन्तर है सनातन धर्म और आर्य समाज में। वेद विरुद्ध बातों को स्वीकार करना और उन्हें व्यवहार में अपनाना ही आर्य (हिन्दू) जाति के पतन का कारण बना है।

1. ईश्वर का स्वरूप-वेदों में अनेक स्थानों पर ईश्वर के स्वरूप का वर्णन है-

ओ३म् खं ब्रह्म। (यजुर्वेद 40, 17)

अर्थ-आकाश के समान व्यापक, सबसे बड़ा, सब जगत का रक्षक ओ३म् है।

ईशा वास्यमिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत्। (यजुर्वेद 40, 1)

अर्थ-इस गतिशील संसार में जो कुछ भी है उस सब में ईश्वर का वास है।

स पर्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम्। (यजुर्वेद 40 8)

अर्थ-वह परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। वह शीघ्रकारी है। उसका कोई शरीर नहीं है। वह छिद्र रहित है।

न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः। (यजुर्वेद 32, 3)

अर्थ-उस परमात्मा की कोई आकृति या मूर्ति नहीं है। उसे नापा या तोला नहीं जा सकता। उस परमात्मा का नामस्मरण अर्थात् उसकी आज्ञा का पालन करना अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना बहुत कीर्ति देने वाला है।

वेद ईश्वर द्वारा दिया मनुष्यों के लिए विधान है। वेद के अनुसार चलना ही ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। वेद के विरुद्ध चलना ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना है।

आर्य समाज वेद में वर्णित ईश्वर के इस स्वरूप को ही स्वीकार करता है।

2. मूर्तिपूजा-आर्य समाज मूर्ति पूजा को ईश्वर की पूजा नहीं मानता। मूर्तिदर्शन मूर्तिदर्शन है, ईश्वर दर्शन नहीं है। संसार में बौद्ध काल से पहले किसी भी रूप में मूर्ति पूजा प्रचलित न थी।

वेद, शास्त्र, उपनिषद्, मनुस्मृति आदि किसी भी वैदिक ग्रन्थ में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। आदि शंकराचार्य, गुरू नानक देव, कबीर, दादू, समर्थ गुरू रामदास, राजा राममोहन राय, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि महापुरुषों ने मूर्तिपूजा का पुरजोर खण्डन और विरोध किया है।

मूर्तिपूजा सबसे बड़ी अज्ञानता है। यह व्यर्थ ही नहीं अपितु हिन्दुओं के विनाश का सबसे बड़ा कारण है। मूर्ति पूजा के सहारे हिन्दू कायर, कमज़ोर, निरुत्साही और अपुरुषार्थी हुए हैं। मुसलमानों ने हज़ारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा है और वहां से अथाह धन लूटा है। किसी मूर्ति ने किसी हमलावर का सिर तक न फोड़ा। और भी मूर्तिपूजा से सन्तुष्ट होकर हिन्दुओं ने ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयत्न भी नहीं किया। सर्वव्यापक होने से ईश्वर हमारे सब कामों को देखता है और जानता है। उसके अनुसार वह हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। वह पूर्ण न्यायकारी है। उसके न्याय से कोई बच नहीं सकता। यह बात जानकर बुरे कामों से बचा जाए ताकि उनके परिणामस्वरूप दुख न भोगना पड़े। साथ ही ईश्वर के न्यायकारी, सत्यकर्त्ता, ज्ञानवान, पवित्र, दयालु आदि गुणों को याद करके उन्हें अंपनाया जाए ताकि सुख मिले। यही ईश्वर का नाम स्मरण है।

निराकार होने से ईश्वर आंख का विषय नहीं है। वह मन का विषय है।

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चैनम्।

हृदा हृदिस्थं मनसा च एनमेव विदुरमृतास्ते भवन्ति।। (श्वेताश्वतर उपनिषद् 4-20)

अर्थ-परमात्मा का कोई रूप नहीं जिसको आंख से देखा जा सके। उसे कोई भी आंख से नहीं देखता। वह हृदय में स्थित है। जो उसे हृदय से तथा मन से जान लेते हैं वे आनन्द को प्राप्त करते हैं।

3. धर्म क्या है-महाभारत में विदुरनीति के अन्तर्गत श्लोक है-

नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति। न तत् सत्यं यत् छलेनाभ्युपेतम्।। (विदुरनीति 3-58)

अर्थ-वह धर्म नहीं है जहां सत्य नहीं है। वह सत्य नहीं है जिसमें छल है।

इस प्रकार-सत्य यह धर्म, असत्य यह अधर्म।

न्याय यह धर्म, अन्याय यह अधर्म।

निष्पक्ष यह धर्म, पक्षपात यह अधर्म।

न लिंगम् धर्मकारणम्। (मनुस्मृति) अर्थ-बाहरी चिन्ह किसी को धर्मात्मा नहीं बनाते।

काला-पीला चोगा पहनना, दाढ़ी मूंछ या सिर के बाल बढ़ाना, कण्ठी माला धारण करना, हाथ में चिमटा रखना, तिलक लगाना आदि बातों का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आचारः परमो: धर्मः। (मनुस्मृति 1-108)

अर्थ-शुभ गुणों के आचरण का नाम ही धर्म है। मन-वचन-कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, सदाचार आदि का नाम धर्म है। संसार के सभी मनुष्यों का यही धर्म है जिसे वेद में मानव धर्म कहा गया है।

ईसाई, पारसी, यहूदी, इस्लाम आदि धर्म नहीं हैं। ये पंथ (मजहब, सम्प्रदाय) हैं जो किसी व्यक्ति द्वारा चलाए लोगों के समूह हैं। इन सम्प्रदायों के कारण ही संसार में अशान्ति और शत्रुता है। ईश्वर ने ये पंथ नहीं बनाए, सिर्फ इंसान ने बनाए हैं। इसलिए सही अर्थों में इंसान ही बनना चाहिए।

4. श्राद्ध-जीवित माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि की खान-पान, वस्त्र, निवास, सद्व्यवहार से सेवा करने को ही आर्य समाज श्राद्ध मानता है। जो मर गए हैं उनके प्रति ये बातें लागू नहीं होतीं। मरने के बाद अगले जन्म में वे जहां चले गए हैं ईश्वर उनकी वहीं पर व्यवस्था करता है। अगर वे मनुष्य की योनि में गए हैं तो माता के स्तनों में वह दूध पहले ही पैदा कर देता है।

5. जातपात-देश में प्रचलित जातपात को आर्य समाज स्वीकार नहीं करता। वेदों में ऐसी जातपात का कोई विधान नहीं है। वेद तो कहता है-

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधुः सौभागाय। (ऋग्वेद 5-60-5)

अर्थ-हममें कोई छोटा या बड़ा नहीं है। हम सब आपस में भाई-भाई हैं। हम सबको मिल करके समृद्धि के लिए काम करना चाहिए।

महर्षि मनु ने समाज की सभी समस्याओं को तीन भागों में बांटा था-अज्ञान, अन्याय और अभाव। जो लोग शिक्षा द्वारा अज्ञान को दूर करते थे वे ब्राह्मण कहलाए, जो लोग समाज को सुरक्षा प्रदान करके अन्याय से बचाते थे वे क्षत्रिय कहलाए और जो लोग समाज की रोटी, कपड़ा, मकान आदि की आवश्यकताएं पूरी करते थे वे वैश्य कहे जाते थे। शेष रहे लोग ऊपर बताए तीनों प्रकार के लोगों की सहायता करते थे, वे शूद्र कहलाए। यह व्यवस्था जन्म के आधार न थी, अपितु व्यक्ति की बौद्धिक और शारीरिक योग्यता के आधार पर थी। आर्य समाज इसी व्यवस्था को स्वीकार करता है जैसे आजकल अध्यापक हैं, पुलिस और सेना है, किसान और व्यापारी हैं। ये जन्म के आधार पर नहीं है अपितु व्यक्ति की योग्यता के अनुसार है। **(क्रमशः)**

Thearyasamaj.org

पृष्ठ 4 का शेष-आओ हम सब.....

उनका यह प्रश्न पुत्र ऋषि कुमार के दिवंगत हो जाने के कारण पूछा जाता है। मैं उत्तर देता हूं कि शारद यज्ञ होगा। जिस यज्ञ को स्वामी जी महाराज ने बड़े ही श्रद्धा व भक्ति से भर कर आरम्भ किया, जिसको पूरा करने के लिए प्रिय पुत्र ऋषि कुमार ने हमेशा अपने आपको आगे ही आगे रखा। जिसकी सफलता के लिए दिन-रात एक कर देता था। महान् याजक पूज्य स्वामी जी महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर पूरे शारद यज्ञ में यजमान के आसन पर सोत्साह शोभायमान होता था। उस शारद यज्ञ को कैसे छोड़ सकते हैं। जिस शारद यज्ञ को प्राणीमात्र के कल्याण के लिए किया जाता है। जिस शारद यज्ञ को राष्ट्र की समृद्धि के लिए किया जाता है। जिस शारद यज्ञ को देवों पितरों की तृप्ति के लिए किया जाता है, जिस शारद यज्ञ में समर्पित हव्य की सुगन्धि से द्युलोक व अन्तरिक्ष लोक सहित पृथ्वी लोक प्रपूरित हो जाता है। जिसकी सुगन्धि को हवाएं अपनी अन्तिम सीमा तक पहुंचाकर सूर्य की किरणों को समर्पित कर देते हैं और सूर्य की किरणें जिन्हें लोकान्तरों तक पहुंचा देती हैं। जिसमें समर्पित अपने भागों को ग्रहण करने के लिए दिव्य आत्माएं देवगण, पितृगण, ऋषि व महर्षिगण प्रतीक्षारत रहते हैं। ऐसे शारदयज्ञ को कैसे छोड़ दें। प्रिय बेटे के वियोग में इसे त्यागने की अपेक्षा इसे और भी उत्साह व उमंग में भरकर श्रद्धा से करना चाहिए क्योंकि उन देवों पितरों की श्रेणी में वह भी विद्यमान होगा। जिस शारद यज्ञ को वह निष्ठा से करता रहा। अपने द्वारा प्रदत्त हवियों से दिव्य पुरूषों को तृप्त करता रहा जिनके परिणामस्वरूप उन दिव्य जनों ने उन दिव्य लोकों में उसे स्थान दिया। अपने पास बुलाया, आज वह भी उन दिव्य पुरूषों के साथ बैठा हुआ इस शारद यज्ञ की प्रतीक्षा में होगा। इसमें प्रदत्त हव्य को देवों, पितरों के साथ ग्रहण करने के लिए लालायित होगा। हम उन्हें निराश कैसे कर सकते हैं। इस यज्ञ के माध्यम से उन दिवंगत आत्माओं का, दिव्य पुरूषों का देव पितरों का भोग अवश्य होगा। उन्हें तृप्त करने का उपक्रम अवश्य होगा। मेरे प्रियजनों आओ हम सब लोग मिलकर इस यज्ञ को श्रद्धा भक्ति से करें, पूरी निष्ठा से करें। यज्ञ की सुगन्धि से जहां सुगन्धित सुरभियां बहेंगी, दिव्यजन तृप्त होंगे। वहीं स्वामी जी महाराज भी आश्वस्त होगें कि मेरे बाद भी यह यज्ञ होता रहेगा, उनकी आत्मा तृप्त हो जाएगी। इसके बाद जब भी वे दिव्य लोकों की ओर प्रस्थान करेंगे तो पूर्णरूप से निश्चिंत होकर प्रस्थान करेंगे। चिन्ता व आशंका का भाव उनके मन में नहीं रहेगा। यही हमारा उनके लिए श्राद्ध व तर्पण होगा। प्रिय पुत्र ऋषि कुमार भी संभवत: यही सोचकर कि पूज्य पिताजी यानि मैं आप सब के साथ मिलकर पूज्य स्वामी जी महाराज को श्राद्ध व तर्पण कर जब यहां से विदा करें तो वह अन्य दिव्यजनों के साथ मिलकर दिव्य लोकों में उनका स्वागत करें। उनके लिए स्थान सुरक्षित रखें। सौ यज्ञों को पूर्ण करने के बाद जब राजा नहुष को स्वर्ग में ले जाए जाने लगा तो इन्द्र ने उन्हें स्वर्ग में स्थान नहीं दिया, उन्हें स्वर्ग में नहीं आने दिया। यह स्थिति स्वामी जी के साथ न हो इसलिए स्वामीजी का चहेता, हम सबका लाड़ला ऋषि कुमार स्वामी जी से पूर्व ही चला गया।

मेरे प्रियजनों सभी आज से ही यज्ञ में भाग लेने का मन बना सीटें आरक्षित कर लो। यजमान के इच्छुक याजक पूर्व ही नाम प्रेषित कर दें। रहने व खाने की सुविधा को न देखें। इन सब में असुविधा भी हो सकती है, क्योंकि इस समय मैं अकेला हूं, अधूरा हूं। हां आप सबका भरपूर सहयोग मिला तो सब ठीक भी हो सकता है पर लक्ष्य तो यज्ञ का बना कर आएं। सुख सुविधाओं की आशा न लगाएं। हो सकता है कि आप लोगों के लिए गद्दे भी सुलभ न हो पाएं, हो सकता है कि भोजन की अच्छी सुविधा भी न हो पाए। भर्तृहरि जी के शब्दों में- क्वचिद् भूमौशय्या क्वचिदपि च पर्यंक शयनम्। क्वचिद् शाकाहारी क्वचिदपि शाल्योदन रूचि। क्वचिद् कंथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बर धर। मनस्वीकार्यार्थी गणयति सुखं न च दुखम् अर्थात् मनस्वी और धैर्यशील व्यक्ति श्रेष्ठ कार्यों में, परोपकार के कार्यों में अपने सुख-सुविधा की ओर ध्यान नहीं देता है, हमेशा कार्यपूर्ति के लिए तत्पर रहता है। मेरी तरफ से पूरी कोशिश रहेगी कि आप को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो, सब प्रकार की सुख सुविधाएं आपको देने का प्रयास करूंगा। अत: इस बात की परवाह किए बिना यज्ञ को लक्ष्य बनाकर आएं। निष्ठा से, श्रद्धा से, तन्मयता से यज्ञ करने के लिए आएं। इस यज्ञ में भाग लेने के लिए आएं। पूज्य स्वामी जी के प्रयासों को आगे भी जारी रखने के लिए आएं। इस महान् यज्ञ में शामिल होकर महान् पुण्य के भागी बन इसमें श्रद्धा से आहुतियां समर्पित कर जहां अपने महान् सुख सौभाग्यों को जगाने का उपक्रम करोगे, वहीं पूज्य स्वामी जी महाराज को अपनी श्रद्धा व समर्पण से तृप्त करोगे। देवों व पितरों के आशीर्वाद के भागीदार बनोगे और अपने प्रिय ऋषि कुमार के प्रति भी अपनी श्रद्धाजंलि समर्पित करोगे। ऋषि कुमार ही क्यों और भी प्रियजन जो इस समय हमारे बीच नहीं रहे उनके प्रति भी श्रद्धासुमन अर्पित करोगे। यज्ञ महान् कर्म है, इसमें हर प्रकार से लाभ ही लाभ है। सब ओर से कल्याण ही कल्याण है। अत: अवसर को चूके नहीं। ऋग्वेद में निर्दिष्ट, महान याजक पूज्य स्वामी जी द्वारा आरम्भित, इस महान यज्ञ में अवश्य भाग लें। यदि परिस्थिति-वश भाग न ले सकें तो अपना भाग इसमें अवश्य ड़ाले। इससे पीछे न हटें। सौभाग्य आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, उसे वापस न जाने दें। ऋग्वेद में निर्दिष्ट यज्ञ में कुछ परिवर्तन:- प्रियजनों पूज्य स्वामी जी महाराज के पास मैं व मेरा बेटा था जिसके लिए वे एक स्थाई यजमान के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होते थे। पर इस बार स्थिति अलग है। बेटा रहा नहीं, स्वामी जी बिस्तर पर पड़े हैं। मैं हूं एकाकी। मेरी धर्मपत्नी सरस्वती देवी जी को अतिथि सेवा के कार्यो से अवकाश नहीं मिलता फिर भी जितना समय मिलता है उसमें यज्ञ में भाग लेती हैं। पुत्रवियोग के कारण व्यथित हैं परन्तु फिर भी स्वामी जी के संकल्पों को पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं। मेरा पहले भी मानना था कि दीर्घकालिक यज्ञों में, लम्बे समय के यज्ञों में स्थाई बैठने वाले यजमान मिल जाते हैं तो ठीक, नहीं तो अंशकालिक यजमानों को भी स्थान दिया जाना चाहिए। ध्येय यज्ञ होना चाहिए, यज्ञ की पूर्णता, यज्ञ की सफलता ध्येय होना चाहिए। यज्ञ में विघ्न बाधा उपस्थित न हो, उसकी नैरन्तरता चलती रहे यह ध्येय होना चाहिए और वह जिस रूप में भी पूर्ण हो वह उपक्रम श्रेयस्कर है। युद्ध का बिगुल बज जाता है। सेनाएं एक दूसरे से टकराने लगती हैं। युद्ध में विजय पाना ही सबका ध्येय होता है। इसके लिए अग्रिम मोर्चों पर लड़ रही सेनाओं को विश्राम के लिए पीछे बुलाया जाता है। उनके स्थान पर दूसरे सैनिकों को मोर्चे पर भेजा जाता है, जो तरोताजा होते हैं, जो दुगुने साहस से लड़ सकते हैं। युद्ध चलता रहता है वह रूकता नहीं। योद्धाओं में अदला-बदली होती रहती है। ऐसे ही दीर्घकालिक यज्ञों में भी होना चाहिए, यह मेरी धारणा है। उसी रूप में इस बार यज्ञ को करने का प्रयास करूंगा। यजमान बनने के इच्छुक व्यक्ति पूर्व ही अपना नाम प्रेषित कर दें। यजमान सपत्नीक हो तो अत्युत्तम। अभाव में एकांगी को भी अवसर दिया जाएगा। जीवन रूपी यज्ञ जब एकांगी होने पर भी चल सकता है। शास्त्र उसे जीने का अधिकार देते हैं। इसी प्रकार एकांगी यजमान बैठने का अधिकारी होना चाहिए। जैसे जीवन जीने का उसे अधिकार है, वैसे ही यज्ञ करने का भी उसे अधिकार होना चाहिए। यह अधिकार उससे छीना नहीं जाना चाहिए।

यज्ञ का दिन व समय:-

प्रियजनों- वार्षिकोत्सव का यज्ञ 10 अक्तूबर 2015 को प्रात: 6:30 से प्रारम्भ हो जाएगा जो 9:30 बजे तक चलेगा। सायंकाल यज्ञ 4:00 बजे से 7:00 बजे तक चलेगा। 12-10-2015 को सायंकाल वार्षिक यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी।

13-10-2015 को प्रथम नवरात्रे को प्रात: 6:30 बजे से ऋग्वेद में वर्णित, पूज्य स्वामी जी द्वारा व्यवहार में परिणत, समाज में बहुचर्चित दुर्लभ शारद यज्ञ आरम्भ हो जाएगा। जिसका सफर मध्याह्न, सायं रात्री के चारों पहरों से अनवरत गुजरता हुआ 14-10-2015 को ब्रह्ममुहूर्त ऊषाकाल प्रथम सूर्योदय का साक्षात्कार कर 9:00 बजे पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न होगा। सहयोग के इच्छुक व्यक्ति निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. पूर्णकालिक यजमान:- पांच टीन घृत द्वारा सहयोग
2. अंशकालिक यजमान:- 1 टीन घृत द्वारा सहयोग।
3. ढाई क्विंटल सामग्री 200/- के हिसाब से-50000/-
4. समिधाएं 25 क्विंटल 600/- के हिसाब से- 15000/-
5. दक्षिणा विद्वानों, सन्यासियों, भजनोंपदेशकों-100000/-
6. भोजन नाश्ता आदि पर:- 80000/-
7. सज्जा टैन्ट आदि पर:- 30000/-
8. कर्मकारों को:- 20000/-

कुल अनुमानित व्यय 3,70,000/-

Thearyasamaj.org

श्री केवल कृष्ण मल्होत्रा जी नहीं रहे

आर्य समाज जण्डियाला गुरु के उपप्रधान श्री केवल कृष्ण मल्होत्रा जी का 3.7.2015 को संक्षिप्त बीमारी के पश्चात् देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार श्री पंडित विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जी ने पूर्ण वैदिक रीति से करवाया। चौथे पर भी श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने उनके गृह पर हवन यज्ञ करवाया। रस्म पगड़ी पर श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने पहले घर पर शान्ति यज्ञ करवाया। इसके पश्चात् इन्द्र फार्म जी. टी. रोड पर श्रद्धांजलि पर उन्हें आर्य समाज के लिए अपूर्णीय क्षति बताया। वह धर्म वृत्ति के व्यक्ति थे। जो भी संसार में आया है उसे अन्त में जाना है। अपने कर्मों के आधार पर दूसरा जन्म प्राप्त करना है। वह यज्ञ प्रेमी सज्जन थे। घर पर दैनिक यज्ञ किया करते थे। वह दानवीर सज्जन थे। आर्य समाज के कार्यक्रमों में दिल खोल कर दान किया करते थे। हम आर्य समाज जण्डियाला गुरु, स्त्री आर्य समाज एवं आर्य वीर दल की ओर से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उन्हें कर्मों अनुसार उच्च जीवन, प्रदान करे और परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। परम पिता परमात्मा उनके पुत्रों को उनके अधूरे कार्य पूरे करने की शक्ति प्रदान करे ताकि वह अपने पिता जी के नाम की ख्याति बढ़ावें। **-मन्त्री आर्य समाज**

डीएवी स्कूल में वृक्षारोपण कार्यक्रमं वृक्ष लगाओ-ऋण चुकाओ

हम प्रकृति का लगातार दोहन कर उससे जीवनोपयोगी पदार्थ ले रहे हैं, परन्तु पुर्नभरण कर उसे कुछ न कुछ लौटाने के प्रति इतने सजग नहीं है। उक्त विचार राजस्थान प्रान्त के लोकायुक्त सज्जन सिंह कोठारी ने आज डीएवी स्कूल तलवंडी ज़िला कोटा में वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किए।

आर्य समाज ज़िला सभा कोटा एवं डीएवी स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में लोकायुक्त कोठारी ने स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, लोकल मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, आर्य समाज ज़िला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा एवं स्कूल के ईको क्लब की अध्यापक-अध्यापिकाएं व छात्र-छात्राओं द्वारा आंवला, जामुन, बादाम, रूद्राक्ष, गुलमोहर, शीशम, नीम व पीपल इत्यादि पौधों को लगाया गया।

इस अवसर पर लोकायुक्त ने पौधारोपण करते हुए उपस्थित जनों, ईको क्लब व आर्य युवा समाज के सदस्यों तथा छात्र-छात्राओं को प्रेरणा दी कि प्रकृति का हमारे ऊपर बहुत बड़ा ऋण एवं उपकार है जिसे हम बहुत कुछ वृक्षारोपण कर व प्रकृति का पुर्नभरण कर चुका सकते हैं। वृक्ष हमारे लिए देव स्वरूप हैं। अतः वृक्षारोपण करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है।

डीएवी स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने लोकायुक्त कोठारी का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए कहा कि आपने यज्ञशाला के उद्घाटन के समय भी आकर हमें आशीर्वाद दिया था इसलिए हम आपके आभारी हैं। उन्होंने कहा कि डीएवी स्कूल की इस वर्ष आर्य समाज सहित कई अन्य संस्थाओं को साथ मिलकर कोटा में विभिन्न स्थानों पर 251 पौधे लगाने का संकल्प लिया है।

आर्य समाज ज़िला सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने वृक्षारोपण के इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए डीएवी स्कूल के साथ मिलकर कार्य करने हेतु अपनी सहमति जताई तथा कहा कि आर्य समाज सदैव ही पर्यावरण के लिए सजग हैं और यज्ञ के माध्यम से भी पर्यावरण शुद्धि हेतु लगातार कार्यरत है।

इस अवसर पर आर्य समाज के प्रतिनिधि के रूप में प्रभु सिंह, कुशवाह, श्रीचंद गुप्ता, जे. एस. दुबे, ओमप्रकाश तापड़िया, रामप्रसाद याज्ञिक, डीएवी स्कूल के ईको क्लब के सदस्य मौजूद थे। डीएवी स्कूल ईको क्लब की इंचार्ज डॉ. आरपी शर्मा ने मुख्य अतिथि तथा समस्त आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

-प्राचार्या डीएवी स्कूल

पृष्ठ 2 का शेष-वैज्ञानिक कृत्य....

याज्ञवल्क्य-जंगली ओषधियों से। जनक-यदि जंगली ओषधियां भी न हों तो ? याज्ञवल्क्य-यदि वे भी न हों तो जल से। जनक यदि जल भी नं हो तो ? कुछ भी न हो तो भी हवन तो करना ही चाहिए। सत्य को श्रद्धा में होम दें। इस पर जनक ने कहा-याज्ञवल्क्य, आप अग्निहोत्र के विषय में जानते हैं, अतः मैं आपको सौ गौवें देता हूं। ऋग्वेद 8.102.19-22 ''नहि मे अस्त्यघ्नया न स्वधितिर्वनन्वति। अथैतादृग्भरामि ते। यदग्ने कानि कानिचिदा ते दारूणि दध्मसि। ता जुषस्व यविष्ठ्य।। यदत्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति। सर्व तदस्तु ते घृतम्।। अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमीन्धे विवस्वभिः।। अर्थात् यद्यपि मेरे पास गौ नहीं है और न ही लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ा है तो भी मैं तेरा यज्ञ करता हूं। हे सर्वश्रेष्ठ विवेकिन्! मैं जैसी-कैसी लकड़ियां लाया हूं, उन्हीं को स्वीकार करो। मधुमक्षिका आदि का जो उच्छिष्ट बह रहा है, वह घृत हो।

अग्निहोत्र करने वाला मनुष्य बुद्धि व क्रिया को मन से मिलाए और फिर हृदय की भावनाओं से अग्नि प्रदीप्त करे। पूर्वोक्त जनक-याज्ञवल्क्य संवाद में मानों इसी वेदमन्त्र का विस्तार किया गया है। लेख की समाप्ति पर निवेदन है कि हवन व यज्ञ आज भी प्रासंगिक एवं अपरिहार्य है। इसके करने से असंख्य लाभ और न करने से हानियां ही हानियां हैं। मनुष्य उसे कहते हैं जो लाभ देने वाले काम करें और हानि वाले किसी कार्य को न करें। हम आपका आह्वान करते हैं कि आईए, प्रतिदिन प्रातः एवं सायं हवन व यज्ञ करने का व्रत लें और जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाएं।

आर्य समाज ज़िला सभा का अभिनन्दन समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषों के आगमन की प्रतीक्षा सम्पूर्ण मानव जाति कर रही थी। उनके द्वारा वैदिक धर्म और वैदिक सभ्यता के प्रचार के साथ कुरीतियों के उन्मूलन के सम्बन्ध में जो विचार रखे गए, वे हमारे लिए अनमोल हैं। उनके विचारों को अपनाने से ही मानव जाति उत्कर्ष की ओर अग्रसर हो सकती है। यह बात लोकायुक्त सज्जन सिंह कोठारी ने डी.ए.वी. स्कूल कोटा में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में पधारने पर आर्य समाज जिला सभा की ओर से सोमवार को डीएवी प्रांगण में आयोजित अभिनन्दन कार्यक्रम के दौरान कही।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के ज़िला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा जी ने की तथा विशिष्ठ अतिथि डीएवी लोकल मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता थे। इस दौरान आर्य समाज कोटा के प्रतिनिधियों की ओर से लोकायुक्त का मंत्रोच्चारण के साथ केसरिया साफा और गले में दुप्टा पहनकर अभिनन्दन किया गया। वहीं डीएवी कोटा की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कोठारी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के लिए मेरे मन में भक्ति और श्रद्धा का भाव है। मेरे अन्दर जो भी अच्छाईयां हैं, उनका श्रेय महर्षि के विचारों और उनके बताए मार्ग को जाता है। उन्होंने कभी स्वयं को ऋषि और जगतगुरु नहीं कहा। उनके द्वारा सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र से संबंधित विचार दिए गए। इसलिए मानव जाति के लिए उनका योगदान महत्त्वपूर्ण है। महर्षि ने वेदों के प्राचीन संदेशों को पहुंचाने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज अन्धविश्वासों और कुरीतियों के उन्मूलन के महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न है। वहीं वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार आर्य समाज के द्वारा किया जाता है। उन्होंने स्वयं को आर्यपुत्र बताते हुए इस पर गर्व जताया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के अन्दर के राम को जगाने का काम भी आर्य समाज को करना है। वहीं प्रकृति के संपोषण व वातावरण के साथ न्याय करने की बात भी कही।

इस अवसर पर विज्ञान नगर के प्रधान जेएस दुबे, तलवण्डी के श्रीचन्द गुप्ता, तिलकनगर के ओमप्रकाश तापड़िया, हाड़ौती वेद प्रचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष रामप्रसाद याज्ञिक, सुमेश कुमार गांधी, दयानन्द वेद प्रचार समिति के मंत्री प्रभु सिंह कुशवाह समेत कई लोग उपस्थित थे।

वेदवाणी

हे वरुण! हमें आत्म-साम्राज्य-स्वराज्य प्रदान करो

नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा।
साम्राज्याय सुक्रतुः॥

-ऋ० १।२५।१०

ऋषि-आजीगर्तिः शुनःशेपः। देवता-वरुणः। छन्दः-गायत्री।

विनय-वरुण सम्राट् हम प्रजाओं के अन्दर आकर बैठा हुआ है। यह कितनी विचित्र बात लगती है। परन्तु यह उतनी ही सच्ची है। वास्तविक साम्राज्य अन्दर ही है। बाहर भी सच्चा सम्राट् वही हो सकता है जिसने पहले अपनी प्रजाओं के हृदयों में सिंहासन प्राप्त कर लिया है। प्रजाओं के हृदयों में घुसे बिना कोई सच्चा सम्राट नहीं बन सकता। ठीक-ठीक सच्चा शासन अन्दर घुसकर ही किया जा सकता है। इसीलिए सब ब्रह्माण्ड के एकमात्र अखण्ड सम्राट् जो वरुण देव हैं, वे हम प्रजाओं के अन्दर आकर बैठे हुए हैं। उस वास्तविक सम्राट के दर्शन के लिए यदि हम निकलें तो हमें बाहरी सम्राटों के पास पहुंचने के समान, उसके पास पहुंचने के लिए कहीं बाहर नहीं फिरना होगा। वे तो स्वयं हमारे अन्दर आकर बैठे हुए हैं और इसलिए आकर बैठे है कि हमें साम्राज्य दे दें 'साम्राज्याय।' परन्तु हम ऐसे मूर्ख हैं कि हमें कुछ खबर ही नहीं है। हम छोटी-छोटी बातों पर हुकूमत पाने के लिए-राज्य पाने के लिए बाहर घूमते-फिरते हैं, लड़ते-झगड़ते, सत्यादि नियमों को भंग करते, मारकाट करते फिरते हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि सर्वश्रेष्ठ (वरुण) राजा तो स्वयं हमें सारे संसार का सम्राट् बनाने के लिए, विश्व का साम्राज्य देने के लिए अन्दर आकर बैठा हुआ है और प्रतीक्षा कर रहा है, किन्तु हम उधर देखते ही नहीं।

जो उधर देखते हैं वे देखते हैं कि वरुण प्रभु "धृतव्रत" हैं-वे व्रतों को धारे हुए हैं, उनके व्रत अटल हैं, उनके नियम कभी टूट नहीं सकते, और वे "सुक्रतु" हैं-शोभन कर्म ही करने वाले हैं, उनसे कभी बुरा कर्म हो ही नहीं सकता। हम भी यदि सत्य नियमों का कभी भंग न करने वाले और सदा शोभन कर्म करने वाले हो जाएंगे तो उसी क्षण हमें वह सच्चा साम्राज्य मिल जाएगा। वे महात्मा उस साम्राज्य को भोग रहे हैं जिनके लिए सत्य व्रतों का उल्लंघन और बुरा काम होना असम्भव हो गया है। यह वह साम्राज्य है जिसके प्रथम दर्शन होने पर सब कालों और सब देशों के इस महापद को प्राप्त महापुरुष चिल्ला उठते हैं-"मुझे जो पाना था वह पा लिया, मैं सम्राट् हो गया", "मैं तो अमृत हूं।" -वैदिक विनय से साभार

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमज़ोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।